श्री वन्ध्येिश्वरी देवी आरती
सुन मेरी देवी पर्वतवासनि,
तेरा पार न पाया |
पान सुपारी ध्वजा नारयिल,
ले तेरी भेंट चढ़ाया |
सुन मेरी देवी पर्वतवासनि,
सुवा चोली तेरे अंग वरिाजै,
केसर तलिक लगाया |
सुन मेरी देवी पर्वतवासनि,
नंगे पग अकबर आया,
सोने का छत्र चढ़ाया |
सुन मेरी देवी पर्वतवासनि,
ऊंचे पर्वत भयो देवालय,
नीचे शहर बसाया |
सुन मेरी देवी पर्वतवासनि,
सतयुग, त्रेता द्वापर मध्ये,
कलयिुग राज सवाया |
सुन मेरी देवी पर्वतवासनि,
धूप दीप नैवेघ आरती,
मोहन भोग लगाया |
सुन मेरी देवी पर्वतवासनि,
ध्यानू भगत मैया तेरे गुण गावै,
मनवांछति फल पावैं |
सुन मेरी देवी पर्वतवासनि,
तेरा पार न पाया |